

हिंदी पाठ्यपुस्तकों के प्रश्नों में वंचित वर्ग की अवस्थिति

ऋतुबाला*

प्रस्तुत शोधपत्र, पाठ्यपुस्तकों के पाठांत अभ्यास प्रश्नों की शिक्षणशास्त्रीय मीमांसा को अपनी विषयवस्तु बनाता है। शोधपत्र, यह पड़ताल करता है कि पाठांत अभ्यास प्रश्नों का सामाजिक-दार्शनिक शिक्षणशास्त्रीय चरित्र क्या है? समाज के दलित-वंचित वर्ग के संबंध में इन अभ्यास प्रश्नों की शिक्षणशास्त्रीय अवस्थिति को समझने का प्रयास करना प्रस्तुत शोधपत्र का केंद्रीय सरोकार है। शोधपत्र का केंद्र बिंदु यह देखना है कि पाठांत अभ्यास प्रश्न, विद्यार्थियों के मध्य समाज के दलित-वंचित समूह की कैसी अस्मिता, छवि का निर्माण करने का मानस रखते हैं। लेख में पाठांत अभ्यास प्रश्न समाज के दलित-वंचित समूह के संबंध में किस प्रकार की छवि उभारते हैं।

पाठ्यपुस्तकों के पाठांत अभ्यास प्रश्नों की शिक्षण-शास्त्रीय मीमांसा को अपनी विषयवस्तु बनाता यह शोध इस बात की पड़ताल करता है कि पाठांत अभ्यास प्रश्नों का सामाजिक-दार्शनिक शिक्षण शास्त्रीय चरित्र क्या है? समाज के दलित-वंचित वर्ग के संबंध में इन अभ्यास प्रश्नों की शिक्षण शास्त्रीय अवस्थिति को समझने का प्रयास करना प्रस्तुत शोधपत्र का केंद्रीय सरोकार है। शोधपत्र देखता है कि पाठांत अभ्यास प्रश्न, विद्यार्थियों के मध्य समाज के दलित-वंचित समूह की कैसी अस्मिता, छवि का निर्माण करने का मानस रखते हैं। पाठांत अभ्यास प्रश्न समाज के दलित-वंचित समूह के संबंध में नकारात्मक छवि अथवा सकारात्मक छवि में से कौन-सी छवि उभारने की शिक्षणशास्त्रीय संभावना वाले हैं। पाठांत अभ्यास प्रश्नों का दलित-वंचित समाज के संबंध में सामाजिक-दार्शनिक शिक्षणशास्त्रीय टेक और पाठ का सामाजिक-दार्शनिक शिक्षणशास्त्र के

बीच कैसा रिश्ता है। पाठांत अभ्यास प्रश्न, अपने सामाजिक-दार्शनिक शिक्षणशास्त्र की वजह से पाठ के साथ हस्तक्षेपकारी हैं अथवा अनुमोदनकारी हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र, समाज के दलित-वंचित वर्ग के संबंध में इन अभ्यास प्रश्नों की शिक्षणशास्त्रीय अवस्थिति को समझने के उपरोक्त सरोकारों के तहत हिंदी भाषी चार राज्यों— दिल्ली, बिहार, राजस्थान एवं हरियाणा में कक्षा 6 से 8 में पढ़ाए जाने वाली हिंदी की पाठ्यपुस्तकों को अध्ययन की विषयवस्तु बनाता है। इस शोध के तहत दलित-वंचित वर्ग के संबंध में उन्हीं पाठों के पाठांत अभ्यास प्रश्नों को शामिल किया गया है जो अनुसूचित जाति से संबंधित हैं। इस रूप में प्रस्तुत शोधपत्र, दलित-वंचित वर्ग के संबंध में अनुसूचित जाति तक, कक्षा के संबंध में कक्षा 6 से 8 तक एवं विषयों के संबंध में हिंदी तक परिसीमित है।

शोध अध्ययन में शिक्षा की आलोचनात्मक धारा के परिप्रेक्ष्य से साहित्यिक समालोचना विधि

* प्रोफ़ेसर, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में शामिल पुस्तकें वे हैं जिनका प्रकाशन, राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल/समिति/निगम एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा किया गया है। इन सभी पाठ्यपुस्तकों का शैक्षिक नीतिगत आधार *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986* है। अध्ययन में शामिल पाठ्यपुस्तकों की प्रकाशन समयावधि 1995 से 1998 है।

अध्ययन की गई चार राज्यों की सोलह पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति से संबंधित आठ पाठों में प्रसंग मिलते हैं। इसमें संत तिरुवल्लुवर पर दिए गए पाठों की गणना नहीं की जा रही है क्योंकि इनकी चर्चा एक संत के रूप में की गई है। अनुसूचित जाति के होने की कोई छाया या चिह्न इन पर लिखे गए पाठों में देखने को नहीं मिलती। इन आठ पाठों में से पाँच पाठों में अनुसूचित जाति के पात्रों से संबंधित प्रश्न पूछे गए हैं। अंबेडकर से संबंधित चार पाठों में से तीन पाठों में प्रश्न पूछे गए हैं। इनमें से दिल्ली 'कक्षा 8' की *युगद्रष्टा* और हरियाणा 'कक्षा 8' की *त्रिविधा* में अंबेडकर पर दिए गए पाठ एकसमान ही हैं यानी दोनों पाठ एक ही हैं जिनमें किसी भी तरह की कोई भिन्नता नहीं है। दोनों पाठों के प्रश्न भी एकसमान ही हैं। प्रश्नों की पुनरावृत्ति को अगर छोड़ दें तो अंबेडकर से संबंधित तीन पाठों में इन पर कुल चौदह प्रश्न बनते हैं। अनुसूचित जाति के प्रसंग वाले दो अन्य पाठों में कुल सात प्रश्न हैं। इस प्रकार अध्ययन में शामिल चार राज्यों की सोलह पाठ्यपुस्तकों के कुल आठ प्रसंगों में यथार्थ रूप से इक्कीस प्रश्न ही दिए गए हैं। अब हम डॉ. भीम राव अंबेडकर से संबंधित 14 प्रश्नों में, इनके संबंध में परोसी गई या उजागर की गई छवि को

तलाशेंगे। इन प्रश्नों में कुछ प्रश्न अंबेडकर के जुझारू व्यक्तित्व तथा उनके द्वारा वंचितों के लिए लड़ी गई लड़ाई को उभारने वाले न होकर लगभग सूचनात्मक किस्म के हैं। जैसे—

1. डॉ. अंबेडकर का जन्म कब और कहाँ हुआ? (*त्रिविधा*, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 65)
2. इनका नाम अंबेडकर कैसे पड़ा? (*त्रिविधा*, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 66)
3. डॉ. अंबेडकर को पीएच.डी. की उपाधि किस विश्वविद्यालय ने दी? (*हिंदी*, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 119)
4. बनारस विश्वविद्यालय के लिए डॉ. अंबेडकर द्वारा इकट्ठी की गई पुस्तकें किसने खरीदनी चाहीं? (*हिंदी*, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 119)
5. अंबेडकर ने कहाँ जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त की? उन्होंने किन विषयों की उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा कौन-सी सबसे बड़ी उपाधि प्राप्त की? (*हिंदी*, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 66)

नीचे प्रश्नों के उत्तर हेतु पाठ से ली गई आधार सामग्री दी जा रही है। प्रश्नों के क्रमानुसार ही आधार सामग्री के क्रम हैं।

1. “अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को मध्य प्रदेश की महू छावनी में हुआ।” (*त्रिविधा*, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 61)
2. “इनके एक अध्यापक ने इनका उपनाम ‘सकपाल’ बदलकर अम्बावदे गाँव के आधार पर ‘अंबेडकर’ रख दिया था।” (*त्रिविधा*, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 63)
3. “1916 में कोलंबिया विश्वविद्यालय ने भीमराव अंबेडकर को उनके शोध ग्रंथ ‘भारत की राष्ट्रीय लाभांश— एक ऐतिहासिक एवं

विश्लेषणात्मक अध्ययन' को स्वीकार करके उन्हें पीएच.डी. (डॉक्टर ऑफ़ फ़िलॉसॉफ़ी) की उपाधि से सम्मानित किया। अब वे अपने नाम के आगे डॉ. लिखने लगे।" (हिंदी, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 118)

4. "न्यूयॉर्क (अमरीका) में अंबेडकर ने लगभग 2000 प्राचीन ग्रंथ खरीदे। पं. मदन मोहन मालवीय ने यह पुस्तकें उस समय दो लाख रुपये में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के लिए खरीदनी चाहीं।" (हिंदी, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 118)
5. अंबेडकर 1913 ई. से 1917 ई. तक उच्च शिक्षा प्राप्त के लिए अमरीका और इंग्लैंड में रहे। उन्होंने अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र और कानून का गहन अध्ययन किया और पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की।" (त्रिविधा, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 63)

उद्धृत पाठ्यपुस्तक से आधार सामग्री को देखने पर स्पष्ट है कि उनसे संबंधित उपर्युक्त पाँच प्रश्न, जिसका ज़िक्र पहले किया जा चुका है, डॉ. अंबेडकर की जीवन-यात्रा से जुड़े प्रसंगों का सिर्फ़ सूचनात्मक एवं विवरणात्मक हिस्सा हैं। इनमें इनका संघर्ष, जाति आधारित समाज में फैली तिक्तता, उनके प्रति विद्रोह की भावना आदि नहीं है। उपरोक्त प्रश्न इस बात को नहीं छूते कि आखिर अंबेडकर के इतनी पढ़ाई करने के पीछे वंचितों, दलितों के प्रति हो रहे अन्याय का दर्द, उनके लिए उत्प्रेरण का काम कर रहा था या नहीं। जबकि अंबेडकर के एक पाठ में इस बात का ज़िक्र है कि, "समाज में जो ऊँच-नीच और छुआछूत की संकीर्णता फैली हुई थी। उसे देखते हुए पिता यह अनुभव करते थे कि यदि भीम को जीवन में आगे बढ़ना है तो यह उच्च शिक्षा

प्राप्त करने पर ही संभव हो सकता है। अंबेडकर से संबंधित कुछ अन्य प्रश्न एवं उनके उत्तर हेतु आधार सामग्री दी गई है—

1. अंबेडकर का पारिवारिक जीवन कैसा था? (त्रिविधा, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 65)
2. छुआछूत के कलंक को मिटाने के लिए डॉ. अंबेडकर ने क्या किया? (त्रिविधा, कक्षा 6 हरियाणा, पृ. 66)

इन प्रश्नों के उत्तर हेतु आधार सामग्री पाठ के आधार पर इस प्रकार है—

1. "अंबेडकर के पिता, रामजी मौलीजी सैनिक स्कूल में प्रधानाध्यापक थे। उन्हें मराठी, गणित और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान था। घर का वातावरण धार्मिक था और परिवार में कबीरपंथी उदार विचारों का पूरा प्रभाव था। समाज में उस समय जो ऊँच-नीच और छुआछूत की संकीर्णता फैली हुई थी, उसे देखते हुए पिता यह अनुभव करते थे कि यदि भीम को जीवन में आगे बढ़ना है तो उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर ही यह संभव हो सकता है।" (त्रिविधा, कक्षा 6 हरियाणा, पृ. 61-62)
2. "छुआछूत के कलंक को मिटाने के लिए अंबेडकर दलित वर्ग को इस कलंक के विरुद्ध संगठित करने के काम में जुट गए। उन्होंने अपना पूरा जीवन इस वर्ग में जागृति पैदा करने और उन्हें पैरों पर खड़ा करने में लगा दिया। वे 'अस्पृश्यों' को सार्वजनिक कुओं से पानी लेने और मंदिर-प्रवेश के लिए संगठित करने में लगे रहे। लंदन में आयोजित दो गोलमेज सम्मेलनों के अवसर पर उन्होंने लोगों का ध्यान अछूतों की समस्या की ओर खींचा। वे जब वाइसराय की एक्ज़िक्यूटिव कौंसिल के सदस्य बने, तो इस

हैसियत से भी वे इस समस्या के समाधान के लिए प्रयत्न करते रहे।”

उपरोक्त दोनों प्रश्नों के माध्यम से अंबेडकर की सकारात्मक छवि को उभारा गया है। साथ ही उनके पारिवारिक जीवन को कठिनाइयों वाला बताते हुए भी परिवार में व्याप्त सकारात्मक दृष्टिकोण को उभारा गया है। पाठ में दिखाया गया है कि अंबेडकर को अनुसूचित जाति में जन्म लेने के कारण अपमान सहकर संघर्ष करना पड़ा। वह गरीब थे, परंतु फिर भी उनके परिवार में हताशा नहीं थी अपितु उनके पिता कबीर पंथ को मानने वाले स्पष्ट व्यक्ति थे जिसका प्रभाव बच्चों पर भी आया। यहाँ अंबेडकर को अस्पृश्यों के लिए संघर्षरत रूप में प्रस्तुत किया गया है। छुआछूत को मिटाने के लिए अंबेडकर द्वारा अस्पृश्यों को एकजुट करते दिखाना और उच्च पद प्राप्ति के पश्चात् भी इनकी समस्या के समाधान के प्रयत्न में लगे रहना, उनकी सकारात्मक छवि ही बनाता है।

1. स्वतंत्र भारत के लिए डॉ. अंबेडकर का क्या महत्वपूर्ण योगदान रहा? उन्हें ‘आधुनिक मनु’ क्यों कहा जाता है? (त्रिविधा, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 66)

2. संसद भवन में अंबेडकर की आदमकद प्रतिमा क्यों लगाई गई? (हिंदी, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 119)

इन प्रश्नों के उत्तर हेतु पाठ आधारित सामग्री इस प्रकार है—

1. “डॉ. अंबेडकर का एक बड़ा योगदान स्वतंत्र भारत का संविधान है। वे उस संविधान-समिति के अध्यक्ष थे जिसने पूरे संविधान का प्रारूप तैयार किया। वह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य था। उनके जैसा अनुभवी कानूनी प्रतिभा से संपन्न,

योग्य और उदार दृष्टिकोण का व्यक्ति ही इस काम को सफलतापूर्वक कर सकता था। इस महत्वपूर्ण काम को करने के कारण ही उन्हें भारत का ‘आधुनिक मनु’ कहकर सम्मानित किया जाता है।”

2. “भारत में जाति-व्यवस्था के अंतर्गत पनपी अस्पृश्यता एवं अपमान का विष स्वयं पीने वाले तथा बदले में देशवासियों को स्वतंत्रता एवं समानता के अधिकारों का अमृत पिलाने वाले इस महान व्यक्ति को भारत सरकार ने वर्ष 1990 के ‘भारत रत्न’ सम्मान से विभूषित किया। संविधान निर्माता होने के नाते स्वतंत्रता एवं समानता का अधिकार दिलाने और देश में जाति, धर्म, भाषा और स्त्री-पुरुष के आधार पर सभी प्रकार के भेदभावों को सदा के लिए खत्म करवाने की वजह से संसद भवन में उनकी आदमकद प्रतिमा को सुशोभित करके सामाजिक न्याय की गरिमा को बढ़ाया।” (हिंदी, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 117)

इन प्रश्नों द्वारा संविधान निर्माण में अंबेडकर के योगदान को पूछना उनके सकारात्मक पहलू को उभारना ही है। अंबेडकर ने संविधान के रूप में दलित वर्गों के हाथ में एक बड़ी शक्ति दी, जिसमें उन्होंने सभी को समानता का अधिकार दिया। दलित वर्गों में अंबेडकर की यह एक बड़ी देन है। इसलिए उनकी आदमकद प्रतिमा संसद भवन में लगाई गई। स्वयं जाति-पाति का विष पीकर भी अस्पृश्यों के अधिकारों के लिए जीवनभर संघर्ष करने वाले व्यक्ति के रूप में अंबेडकर को दिखाना उनकी सकारात्मक छवि को ही उभारना है।

अंबेडकर पर आधारित अन्य प्रश्न आगे दिए गए हैं—

1. लेखक के मत में अंबेडकर का जन्म अस्पृश्य जाति में क्यों हुआ? (हिंदी, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 119)
2. अपमान तथा अवहेलना के अभिशाप के आगे जब वे हार मानने लगे तभी भाग्य ने उनका सबल पथ-प्रदर्शन किया। भाव स्पष्ट करो। (हिंदी, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 119)

उत्तर हेतु आधार सामग्री—

1. “इस प्रतिभाशाली व्यक्ति का जन्म अस्पृश्य जाति में संभवतः इसलिए हुआ था कि वह स्वयं अनेक कष्ट एवं अपमान सहकर रूढ़िवादिता के कारण भारतीय संस्कृति पर लगे जाति-पाति के कलंक को सदैव के लिए धो डालें। यही कारण था कि जब-जब कठिन परिस्थितियाँ आईं, अपमान तथा अवहेलना के अभिशाप के आगे वे हार मानने लगे तभी भाग्य ने उनका सबल पथ-प्रदर्शन किया। जीवन के मरुस्थल में उन्हें वांछित मरुद्यान भी मिले।” (हिंदी, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 117)
2. इस प्रश्न के उत्तर की आधार सामग्री में अंबेडकर की जुझारू कर्मशीलता के साथ-साथ भाग्यवादी तत्वों की ध्वनि भी एक प्रकार से गुंथी हुई है। यह अंबेडकर द्वारा झेले गए जातिगत भेदभाव के प्रति उनके विद्रोह की आँच को कम करती है।

अंबेडकर पर आधारित कुछ और प्रश्न इस प्रकार हैं—

1. भीम के सपने संभवतः साकार न हो पाते यदि बड़ौदा के महाराजा का वरदहस्त उनके सिर पर ना होता। भाव स्पष्ट करो। (हिंदी, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 119)
2. जाति-पाति का भूत निरंतर उनका पीछा करता रहा। आशय स्पष्ट कीजिए। (हिंदी, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 119)

उपरोक्त प्रश्नों (संख्या 1 व 2) के उत्तर हेतु आधार सामग्री—

1. “भीम के सपने संभवतः साकार न हो पाते यदि बड़ौदा रियासत के महाराजा सीया जी राव गायकवाड़ का स्नेह भरा वरदहस्त उनके सिर पर ना होता। मैट्रिक पास करने के बाद आर्थिक अभाव के कारण आगे की पढ़ाई रुकती दिखाई दी। महाराजा के अनुग्रह एवं आर्थिक सहायता से उनकी पढ़ाई जारी रही और उन्होंने 1913 में बी.ए. की डिग्री प्राप्त की। महाराजा ने पिछड़ी जातियों के कुछ छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अमरीका भेजने की घोषणा की। भीमराव अंबेडकर ने अपने पूर्व परिचय तथा विलक्षण बुद्धि से यह अवसर प्राप्त किया और कोलंबिया विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया। इसके साथ ही अंबेडकर के जीवन में एक नए अध्याय का सूत्रपात हुआ।” (हिंदी, कक्षा 6, हरियाणा, पृ. 118)
2. “विद्यालय में तो वह जाति-पाति के भेदभाव को सहते ही रहे अपितु बड़े होने पर जब अंबेडकर महाराजा के सैनिक सचिव के पद पर थे तब भी उन्हें अपने ही कार्यालय में बड़े बुरे व्यवहारों का सामना करना पड़ा। पढ़े-लिखे व्यक्ति ही नहीं अपितु चपरासी भी उनके साथ छुआछूत का-सा व्यवहार करते थे। उनके हाथों से कोई कागज तक नहीं पकड़ता था। उन्हें कार्यालय में पीने को पानी नहीं मिलता था और दफ्तर की दरियाँ भी उनके चलने से अशुद्ध हो जाती थीं। हारकर वह पद उन्हें छोड़ना पड़ा और विद्यालय में अध्यापन कार्य करना पड़ा। पर छुआछूत के अभिशाप ने यहाँ भी पीछा नहीं छोड़ा।”

प्रश्न संख्या 1 अंबेडकर के व्यक्तित्व को कम करके आँकने वाला है। इस प्रश्न में अंबेडकर के माध्यम से अन्य के व्यक्तित्व को ऊँचा उठाया गया है। दिखाया गया है कि बिना बड़ौदा महाराजा की मदद के अंबेडकर अपने ध्येय को प्राप्त नहीं कर सकते थे। महाराजा द्वारा दी गई मदद को जीवन में निर्णायक बताना अंबेडकर के व्यक्तित्व को कम करके आँकना है। अमरीका जाने के लिए दी गई छात्रवृत्ति में भी अंबेडकर की विलक्षण बुद्धि के साथ महाराजा से पूर्व परिचय को भी इंगित किया गया है। अब सवाल यह उठता है कि जिसे इतनी विलक्षण बुद्धि का दिखाया गया है उसके लिए पूर्व परिचय क्या इतना ज़रूरी और निर्णायक हो सकता है? जबकि यह छात्रवृत्ति अछूत छात्रों के लिए ही थी। पूर्व परिचय को भी मदद का कारण मान लें तो भी लगभग सभी व्यक्तियों के जीवन में इस तरह के मोड़ आते हैं जब वह दूसरों से सहारा लेते हैं। परंतु यहाँ इस मदद को प्रमुखता से देने की प्रवृत्ति पर प्रश्न-चिह्न लगाना अनिवार्य है। अंबेडकर के व्यक्तित्व को कम करके आँकना उनके प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को उभारता है।

अगले प्रश्न (संख्या 2) के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि उस समय जातिगत भेदभाव इतना अधिक फैला हुआ था कि अंबेडकर जहाँ जाते वहाँ यह जाति-पाति का भूत लगातार उनके पीछे लगा रहता। उपरोक्त प्रश्न संख्या 2 की आधार सामग्री जातिगत भेदभाव के प्रति अंबेडकर के रोष तथा विरोध की जगह उनकी असहायता परोसती है, जैसे— ‘विद्यालय में तो वह जाति-पाति के भेदभाव को सहते ही रहे’, ‘हारकर वह पद छोड़ना

पड़ा और उन्हें बंबई आकर विद्यालय में अध्यापन कार्य करना पड़ा।’ अपने साथ दफ़्तर में हुए जातिगत भेदभाव के प्रति उनके विरोध को यहाँ नौकरी छोड़ने का कारण नहीं बताया गया। इसकी जगह ‘हारकर’, ‘सहते ही रहे’ जैसे जुमलों का प्रयोग हुआ। ऐसे शब्द निश्चित रूप से अंबेडकर के जुझारू व्यक्तित्व के ताप को ठंडा करने वाले हैं।

अंबेडकर पर आधारित शेष प्रश्न प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

1. अंबेडकर को विद्यार्थी जीवन से ही छुआछूत के कटु अनुभव होने लगे थे, इससे संबंधित दो घटनाओं का उल्लेख करो? (त्रिविधा, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 66)
2. अंबेडकर के प्रति किए गए व्यवहारों से हमारी किन सामाजिक संकीर्णताओं का पता चलता है? (त्रिविधा, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 66)

इन प्रश्नों (संख्या 1) से संबंधित उत्तर हेतु आधार सामग्री इस प्रकार है—

1. “बालक भीम सकपाल को विद्यार्थी जीवन से छुआछूत के कटु अनुभव होने लगे। गर्मी के दिन थे, 6 वर्ष का भीम अपने बड़े भाई के साथ पिता से मिलने जा रहा था। दोनों भाई स्टेशन पर उतरे। पिता किसी कारणवश उन्हें लेने नहीं जा सके। गाँव दूर था। देहात की ऊबड़-खाबड़ पैदल-यात्रा थी। स्टेशन मास्टर ने दया करके उनके लिए किराए की एक बैलगाड़ी ठीक कर दी। दोनों बच्चे गाड़ी में बैठकर कुछ दूर ही गए थे कि गाड़ीवान ने उनकी जाति पूछी। बच्चों ने सच-सच बता दिया। अब तो गाड़ीवान आग-बबूला हो गया और उसने दोनों बच्चों को गाड़ी से धकेल दिया। दोनों भाई रोते-बिलखते

काफी देर बाद घर पहुँचे। रास्ते में उनको किसी ने पीने के लिए पानी तक नहीं दिया।” (त्रिविधा, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 66)

2. “एक बार की बात है, बालक भीम भयंकर वर्षा से बचने के लिए एक मकान के बरामदे में खड़ा था। सर्वर्ण मकान मालिक को जब बालक की जाति का पता चला तो उसने उसे बस्ते सहित बरसात के कीचड़ सने पानी में धकेल दिया।” (त्रिविधा, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 62)

उपरोक्त प्रश्न के माध्यम से अंबेडकर के प्रति किए गए समाज के अत्याचारों को प्रस्तुत किया गया है। यहाँ किसी प्रकार की छवि को उभारा नहीं गया है। इस प्रश्न के माध्यम से यह जरूर सामने आता है कि अंबेडकर ने बचपन से ही कितनी सामाजिक संकीर्णता का सामना किया और अत्याचारों के बावजूद उन्होंने एक खास मुकाम को प्राप्त किया।

प्रश्न (संख्या 2) दो के उत्तर की आधार सामग्री यहाँ अलग से देना पहले की आधार सामग्रियों की पुनरावृत्ति ही होगी, क्योंकि पहले की आधार सामग्रियों में उस समय के समाज की सामाजिक संकीर्णताओं को दिखाया जा चुका है। मसलन दफ़्तर में किया गया बर्ताव, बरसात में धकेलने की घटना, बैलगाड़ी से धकेलने की घटना इत्यादि। इससे यही पता चलता है कि उस समय जातिगत भेदभाव का प्रभाव इतना था कि ऊँचा पद और मासूम बचपन भी उसके आगे कुछ नहीं थे। ना ऊँचा पद लोगों को डराता था और ना ही बचपन की मासूमियत उन्हें पिघला पाती थी। अछूत जाति का होने के कारण संस्कृत पढ़ने का अधिकार भी उन्हें प्राप्त नहीं था। उस समय इस तरह की संकीर्णताओं की भरमार थी।

डॉ. अंबेडकर ने बौद्ध धर्म की दीक्षा क्यों ली? उत्तर हेतु आधार सामग्री—

“धार्मिक दृष्टि से डॉ. अंबेडकर को भगवान बुद्ध का मत अधिक आकर्षक लगता था, क्योंकि उसमें जन्म-आधारित जातिगत भेदभाव या ऊँच-नीच के लिए कोई स्थान नहीं था। इसलिए अंबेडकर ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली।” (त्रिविधा, कक्षा 8, हरियाणा, पृ. 65)

इस प्रश्न को सकारात्मक या नकारात्मक छवि के दृष्टिकोण से देखना कठिन कार्य है क्योंकि अंबेडकर द्वारा धर्म-परिवर्तन की घटना को देखने का नज़रिया अलग-अलग हो सकता है। इसलिए इस प्रश्न को यथास्थिति वाले प्रसंग में रखना उचित होगा।

अंबेडकर के पाठों से संबंधित प्रश्नों के विश्लेषण के पश्चात् अनुसूचित जाति के पात्रों एवं प्रसंगों से संबंधित पूछे गए बाकी सभी प्रश्नों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है—

1. मल्लाहों ने अपनी-अपनी नावें गंगा के किनारे क्यों डुबो दी थीं? सही उत्तर पर निशान लगाओ—

क) उन्हें डर था कि अंग्रेज़ सैनिक उनकी नावों का इस्तेमाल भारतीयों के विरुद्ध करेंगे।

ख) उन्हें यह डर था कि अंग्रेज़ उनकी नावें ज़बरदस्ती छीन ले जाएँगे।

ग) उन्हें डर था कि उनकी नावों को अंग्रेज़ बेकार कर देंगे।

घ) उन्हें डर था कि आने वाले तूफ़ान में उनकी नावें बहकर दूर चली जाएँगी।

(किशोर-भारती, भाग 3, कक्षा 8, दिल्ली, पृ. 91)

इस प्रश्न के उत्तर हेतु आधार सामग्री है—

“भीमा— छोटी-बड़ी सब (नावें) मिलाकर पानी में से निकालते-निकालते दम फूल गया।

सरदार— न डूबाते, तो फिरंगी जनेल गोलियों से नावों को बेकार कर देता।”

(किशोर-भारती, भाग 3, कक्षा 8, दिल्ली, पृ. 74)

प्रस्तुत पाठ एवं उससे संबंधित आधार सामग्री ‘विजय-बेला’ नामक पाठ से उद्धृत है। इस पाठ में अनुसूचित जाति के पात्रों की भागीदारी सात पृष्ठों की है और पाठ कुल 14 पृष्ठों का है। पाठ में लगभग आधी भागीदारी वाले पात्रों से संबंधित प्रश्न केवल दो हैं। इसके पहले प्रश्न में मल्लाह पात्रों द्वारा गंगा के किनारे नावें डुबोने का कारण पूछा गया है। प्रश्न में ही चार विकल्प देकर सही विकल्प के आगे निशान लगाना है। इस प्रश्न में तो मल्लाहों की छवि को नहीं उभारा गया। परंतु प्रश्न के जो चार विकल्प दिए गए हैं, वे इन मल्लाहों की नकारात्मक छवि उभारने वाले हैं। इन विकल्पों की शुरुआत में एक वाक्यांश दिया गया है— “उनको डर था कि” इस वाक्यांश से यही छवि उभरती है कि उन्होंने नावें डर से डुबाई थीं, किसी राष्ट्रभक्ति या किसी उद्देश्य के तहत नहीं छिपाई थीं। यहाँ डर को प्रमुखता से उभारा गया है। अन्य कारणों को न देना कि ‘किसके लिए यह डर था’ इन मल्लाहों की नकारात्मक छवि बनाना है।

2. ऐसों की कमी नहीं सरदार गाजीपुर के गुमाश्ते का हाल तो सुना होगा?

उपर्युक्त वाक्य में सांकेतिक तथ्य और घटना का संक्षेप में वर्णन करो?

(किशोर-भारती, भाग 3, कक्षा 8, दिल्ली, पृ. 78)

इस प्रश्न में पूछी गई घटना का सारांश यह है कि “कुंवर सिंह को पकड़वाने के लिए फिरंगियों ने 25 हजार का इनाम रखा था। जिसकी लालच में गाजीपुर का एक मल्लाह फिरंगियों को कुंवर सिंह से संबंधित गुप्त सूचनाएँ देता था।” यहाँ गाजीपुर के उस

एक मल्लाह पर प्रश्न किया गया है जिसका जिक्र, पाठ में नाममात्र के लिए आया है। परंतु उन मल्लाह पात्रों पर प्रश्न नहीं किया गया (सरदार, भीमा और मैकू) जिन्होंने राजा कुंवर सिंह को और उनके सैनिकों को अंग्रेजों की सेना से बचाकर गंगा के दूसरे घाट पर सुरक्षित उतारने का काम किया है। ये मल्लाह पात्र मुख्य पात्रों में से ही एक हैं और जिन्होंने कुंवर सिंह को बचाते समय अपनी जान की परवाह किए बगैर जान की बाजी लगा दी। ऐसे पात्रों के संबंध में उनकी वीरता, देशभक्ति और ईमानदारी को उभारने वाला एक भी प्रश्न इस पाठ में नहीं दिया गया है। पाठ में इन मल्लाहों को साहसी तो दिखाया गया परंतु इनकी ऐसी छवि को उभारने की आवश्यकता प्रश्नों द्वारा महसूस नहीं की गई।

‘ठेस’ कहानी से संबंधित प्रश्नों का विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत किया गया है—

1. सिरचन को लोग चटोर क्यों कहते हैं?
2. गाँव के लोग मजदूरी के लिए सिरचन को क्यों नहीं बुलाते?

(किशोर-भारती, भाग 3, कक्षा 8, दिल्ली, पृ. 15)

इन प्रश्नों के उत्तर से संबंधित आधार सामग्री क्रमशः इस प्रकार है—

1. “सिरचन को लोग चटोर भी समझते हैं। तली-बघारी हुई तरकारी, दही की कढ़ी, मलाई वाला दूध, इन सबका प्रबंध पहले कर लो तब सिरचन को बुलाओ; दुम हिलाता हुआ हाज़िर हो जाएगा। खाने-पीने में चिकनाई की कमी हुई कि काम की सारी चिकनाई खत्मा। अधूरा रखकर उठ खड़ा होगा, आज तो अब अधकपाली दर्द से माथा टनटना रहा है थोड़ा-सा रह गया है, किसी दिन आकर पूरा कर दूँगा... ‘किसी दिन’ माने कभी नहीं।”

(किशोर-भारती, भाग 3, कक्षा 8, बिहार, पृ. 10)

2. “खेती-बाड़ी के समय, गाँव के किसान सिरचन की गिनती नहीं करते। लोग उसको बेकार ही नहीं, ‘बेगार’ समझते हैं। इसलिए खेत-खलिहान की मजदूरी के लिए कोई नहीं बुलाने जाता है सिरचन को। क्या होगा उसको बुलाकर? दूसरे मजदूर खेत पहुँचकर एक-तिहाई काम कर चुकेंगे, तब कहीं सिरचन राय हाथ में खुरपी डुलाता हुआ दिखाई पड़ेगा, पगडंडी पर तौल-तौल कर पाँव रखता हुआ, धीरे-धीरे। मुफ्त में मजदूरी देनी हो तो और बात है।”

(किशोर भारती, भाग 3, कक्षा 8, दिल्ली, पृ. 9)

उपर्युक्त दोनों प्रश्नों और उत्तर के माध्यम से सिरचन की नकारात्मक छवि को उभारा गया है। सिरचन को चटोर समझने के संबंध में जो प्रमाण दिए गए हैं उसमें उसे खाने का भक्त दिखाया गया है। सिरचन को खाने के पीछे दुम हिलाने वाला और खाने में चिकनाई की कमी होने पर अधूरा काम छोड़ कर बहाना बनाकर जाने वाला मानते हैं। लोगों की इस मान्यता से संबंधित सवाल पूछने का साफ़-साफ़ अर्थ सिरचन की नकारात्मक छवि को पुष्ट करना है जबकि लेखक का सिरचन के विषय में मानना है कि, “....काम करते समय उसकी तन्मयता में ज़रा भी बाधा पड़ी कि गेहुअन साँप की तरह फुफकार उठता, फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम। सिरचन मुँहजोर है, कामचोर नहीं।” “सिरचन जब काम में मग्न रहता है तो उसकी जीभ ज़रा बाहर निकल आती है, ओंठ पर। अपने काम में मग्न सिरचन को खाने-पीने की सुधि नहीं रहती।” लेखक के अनुसार सिरचन काम करते समय खाना-पीना भूल जाता है जबकि प्रश्न के माध्यम से सिरचन के सिर्फ चटोर पक्ष को बल मिलता है। लेखक का मानना है कि सिरचन काम में बाधा

पड़ने पर गेहुअन साँप की तरह फुफकारता है जबकि प्रश्न के द्वारा सिर्फ यह उभरने की संभावना है कि खाने में चिकनाई की कमी होने पर बहाना कर काम अधूरा छोड़ जाता है। काम के प्रति इतना लगनशील तथा प्रतिबद्ध पात्र के लिए उपरोक्त किस्म के प्रश्न पूछना वस्तुतः पात्र के साथ एवं लेखक की भावना के साथ अन्याय है।

दूसरे प्रश्न के उत्तर की आधार सामग्री बहुत बिखरी होने के कारण यहाँ दे पाना संभव नहीं है इसलिए यहाँ संभावित उत्तर के साथ विश्लेषण किया गया है। छोटी चाची के सिरचन पर बिगड़ने का कारण सिरचन के मुँहफट होने को दिखाता है। यहाँ भी सिरचन की नकारात्मक छवि को उभारा गया है। चाची के बिगड़ने के पीछे का कारण सिरचन द्वारा मंझली भाभी को किसी भी तरह से चटाई ना बनाकर देना, मंझली भाभी के मायके वालों का ज़िक्र करके छेड़ना तथा चाची से मसखरी करते हुए सुपारी माँगना आदि है। इन प्रसंगों से यही छवि आती है कि सिरचन मुँहजोर है उसे किसी का कोई लिहाज़ नहीं है। इस प्रश्न द्वारा सिरचन की ऐसी छवि ही उभारी गई है।

तीसरे प्रश्न के माध्यम से सिरचन की नकारात्मक छवि को बल दिया गया है। सिरचन को खेती के काम के लिए बेकार ही नहीं बेगार समझा जाता है। उसके संबंध में यह दिया गया है कि मुफ्त में मजदूरी देनी हो तो सिरचन को बुलाया जाए। इस संबंध में प्रश्न पूछने का अर्थ सिरचन की नकारात्मक छवि को ज्यादा उभारना है जबकि इसके साथ ही एक अन्य प्रसंग भी दिया गया है। “...सिरचन की मड़ैया के पास बड़े-बड़े बाबू लोगों की सवारियाँ बंधी रहती थीं। उसे लोग पूछते ही नहीं थे, उसकी खुशामद भी करते थे।”

सिरचन की कारीगरी से संबंधित इस तरह के प्रसंगों पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे गए हैं। इस पाठ के प्रश्नों ने लेखक की पाठ देने की मूल भावना के साथ न्याय नहीं किया।

1. सिरचन किस प्रकार की कारीगरी करता है?
(किशोर-भारती, भाग 3, कक्षा 8, बिहार, पृ. 15)
2. मानू के विदा होने पर सिरचन ने क्या किया?
(किशोर-भारती, भाग 3, कक्षा 8, बिहार, पृ. 15)

इन प्रश्नों के उत्तर की आधार सामग्री—

1. “सिरचन जाति का कारीगर है। एक-एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता। फिर, कुच्चियों को रंगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्ता। मोथी घास और पटेर की रंगीन शीतलपाटी, बाँस तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगे डोर के मोढ़े, भूसी-चुन्नी रखने के लिए मूँज की रस्सी के बड़े-बड़े जाले, हलवाहों के लिए ताल के सूखे पत्तों की छतरी-टोपी तथा इस तरह के बहुत से काम सिरचन करता है।”

(किशोर-भारती, भाग 3, कक्षा 8, बिहार, पृ. 10)

इन प्रश्नों में सिरचन की कारीगरी के विषय में पूछा गया है, जिसके माध्यम से उसकी कारीगरी और उसके हुनर की सकारात्मक छवि उभरती है। जहाँ प्रश्न के माध्यम से उसकी कारीगरी की बारीकी को उभारा गया है, वहीं काम करते समय उसकी धैर्यशीलता, तन्मयता और ईमानदारी को भी उभारा गया है, जैसे— ‘कुच्चियों को रंगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्ता।’

दूसरे प्रश्न के उत्तर हेतु आधार सामग्री दे पाने की असमर्थता के कारण संभावित उत्तर देते हुए विश्लेषण किया जा रहा है। मानू के विदा होने

पर सिरचन ने शीतलपाटी, चिक और एक जोड़ी आसनी, कुश की बनाकर मानू दीदी को देने के लिए स्टेशन पर ले आया और सभी चीजें मानू दीदी को दे दीं। इस प्रश्न के माध्यम से सिरचन की सकारात्मक छवि को उभारा गया है। यहाँ सिरचन की दयालु, प्रेमिल और स्नेहिल छवि को उजागर किया गया है क्योंकि सिरचन मानू दीदी के घर में चाची द्वारा अपमानित करने पर स्वाभिमान के कारण दीदी का काम तो अधूरा ही छोड़ आया। क्योंकि उससे उसके कलाकार दिल को ठेस पहुँची थी। परंतु प्रेम और मानू दीदी की इज्जत बढ़ाने के लिए वह सारी चीजें स्वयं अपने घर बनाकर स्टेशन पर लाकर मानू दीदी को ससुराल जाते समय दे दीं। इससे यह बात भी सामने आती है कि सिरचन उस परिवार से अपना जुड़ाव अनुभव करता था। वह केवल पैसों के लिए ही उस हवेली में काम करने नहीं आता था। यहाँ सिरचन का बड़प्पन दिखाया गया है।

अध्ययन में शामिल कुल 16 पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जाति से संबंधित कुल 21 प्रश्न हैं। जिसमें अंबेडकर के पाठों पर आधारित 14 प्रश्न हैं तथा अनुसूचित जाति से संबंधित दो अन्य प्रसंगों पर आधारित कुल सात प्रश्न हैं। इन 21 प्रश्नों में छह प्रश्नों के उत्तर सकारात्मक छवि उभारने वाले, आठ नकारात्मक छवि उभारने वाले, दो किसी तरह की छवि नहीं उभारने वाले तथा पाँच सूचनात्मक विवरण की अपेक्षा रखने वाले हैं। नकारात्मक छवि उभारने वाले आठ प्रश्नों में से सात प्रश्न ऐसे हैं जिन्हें सकारात्मक छवि उभारने वाला होना चाहिए था। इसमें तीन प्रश्न अंबेडकर के हो सकते थे तथा चार अन्य। परंतु प्रश्न की संरचना ऐसी की गई जिससे यह उद्देश्य

नहीं सध सकता। फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'ठेस' में 'सिरचन' पात्र को लेकर लेखक की जो मूल भावना थी उसका संवहन सिरचन की नकारात्मक छवि को उभारने वाले तीन प्रश्नों में नहीं किया गया है। इस पाठ में कुल पाँच प्रश्न हैं जिनमें से सिर्फ दो में सिरचन का सकारात्मक पक्ष उभरकर आया है। बाकी के तीन प्रश्न (नकारात्मक छवि उभारने वाले) सिरचन को लेकर लेखक की मूल भावना के साथ न्याय करने वाला

कतई नहीं माना जा सकता। अंबेडकर से संबंधित पाँच सूचनात्मक प्रश्न भी ऐसे ही हैं जिन्हें अंबेडकर के व्यक्तित्व के मद्देनजर सकारात्मक बनाने की पूरी गुंजाइश थी। एक अन्य प्रश्न जो कि मल्लाह को लेकर है, पाठ के साथ न्याय नहीं करता। यह प्रश्न पाठ में दी गई मल्लाह की देशभक्ति, बुद्धिमत्ता, साहस तथा त्याग के प्रसंग को इस प्रकार मोड़ता है कि वह नकारात्मक छवि वाला बन जाता है।

संदर्भ

- किशोर भारती, भाग 1, कक्षा 6. 1995. दिल्ली पाठ्यपुस्तक ब्यूरो, दिल्ली.
- , भाग 1, कक्षा 6. 1998. बिहार स्टेट टेक्स्टबुक कॉरपोरेशन लिमिटेड, बिहार.
- , भाग 2, कक्षा 7. 1996. दिल्ली पाठ्यपुस्तक ब्यूरो, दिल्ली.
- , भाग 2, कक्षा 7. 1997–98. बिहार स्टेट टेक्स्टबुक कॉरपोरेशन लिमिटेड, बिहार.
- , भाग 3, कक्षा 8. 1996. दिल्ली पाठ्यपुस्तक ब्यूरो, दिल्ली.
- , भाग 3, कक्षा 8. 1998. बिहार स्टेट टेक्स्टबुक कॉरपोरेशन लिमिटेड, बिहार.
- गद्य गौरव, कक्षा 7. 1993–94. बिहार स्टेट टेक्स्टबुक कॉरपोरेशन लिमिटेड, बिहार.
- गद्य सोपान, कक्षा 8. 1995. बिहार स्टेट टेक्स्टबुक कॉरपोरेशन लिमिटेड, बिहार.
- हिंदी, कक्षा 6. 1997. नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री, हरियाणा.
- , कक्षा 6. 1997. राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल, जयपुर, राजस्थान.
- , कक्षा 7. 1995. नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री, हरियाणा.
- , कक्षा 7. 1997. राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल, जयपुर, राजस्थान.
- , कक्षा 8. 1995. नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री, हरियाणा.
- , कक्षा 8. 1997. राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल, जयपुर, राजस्थान.
- युगद्रष्टा, कक्षा 8. 1996. दिल्ली पाठ्यपुस्तक ब्यूरो, दिल्ली.
- त्रिविधा, कक्षा 8. 1996. नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री, हरियाणा.